फीनोमिनोलॉजी के आधार (Roots)

आज फीनोमिनोलॉजी के सम्बन्ध में जो कुछ हम पढ़ते हैं उन सबकी जड़ें यूरोप के फीनोमिनोलॉजीकल दर्शन में है। विशेषकर *एडमंड हसरेल* (Edmund Hussrel, 1959-1938) की कृतियों में। हसरेल पहले विचारक थे जिन्होंने फीनोमिनोलॉजी पद को काम में लिया, परिभाषित किया और एक विद्या के रूप में विकसित किया। उनके अनुसार *फीनोमिनोलॉजी की रूचि उन वस्तुओं को जानने में है जिनका बोध व्यक्तियों को अपनी इन्द्रियों द्वारा होता है।* फीनोमिनोलॉजी के बारे में यह एक अनिवार्य बिन्दु है। यह विद्या कहती है कि अपने प्रत्यक्ष अनुभव को, जिन्हें हम अपनी इन्द्रियों द्वारा प्राप्त करते हैं, उसे किसी और उपागम द्वारा नहीं जाना जा सकता। घटनाओं के बारे में हमारा सम्पूर्ण ज्ञान इन्द्रीयजन्य है। इसके अतिरिक्त वस्तुओं के बारे में हमारे जो कुछ बयान हैं, केवल अटकलबाजी है। हसरेल तो यहाँ तक कहते हैं कि हमें इस तरह की अटकलबाजी से हमेशा दूर रहना चाहिये। समाजशास्त्र से हसरेल को फीनोमिनोलॉजी का जनक समझा जाता है।

फीनोमिनोलॉजिकल समाजशास्त्र वह समाजशास्त्र है जो इन्द्रियों द्वारा वस्तुओं को जैसे देखता है, वैसी ही उसकी निश्चित व्याख्या करता है। प्राय: ऐसा होता है कि वस्तुओं के बारे में एक व्यक्ति का जैसा प्रत्यक्ष ज्ञान है वैसा ही कुछ दूसरे लोगों का भी ज्ञान होता है। जब अनेकों लोगों के प्रत्यक्ष ज्ञान को जो दिन-प्रतिदिन की दुनिया में देखने को मिलता है, उन्हें हम सम्मिलित कर लेते हैं। यही हमारा समाज या दुनिया के बारे में सम्मिलित या समग्र ज्ञान है।

हसरेल के बाद जर्मनी के *शूट्ज* (Schutz) का योगदान भी महत्वपूर्ण है। वे एक सामाजिक दार्शनिक थे जो 1939 में नाजी प्रशासन की तबाहियों से परेशान होकर अमेरिका आ गये। दिन में वे एक बैंक में काम कर जीवनयापन करते थे और सायंकाल में सामाजिक दर्शनशास्त्र को पढ़ाते थे। 1952 में वे समाजशास्त्र के प्रोफेसर हो गये। उनका देहान्त 1959

में हुआ। यह उन्हीं के प्रयत्नों का परिणाम है कि अमेरिका में फीनोमिनोलॉजी एक समाजशास्त्र की हैसियत से प्रतिष्ठित या मान्य हुआ।

जब हम प्रश्न उठाते हैं कि वे कौन से कारण थे जिन्होंने फीनोमिनोलॉजी को यूरोप और अमेरिका में जन्म दिया? इसका उत्तर बड़ा दिलचस्प है। यूरोप में नाजी सल्तनत थी। फासीवाद चल रहा था। जन जीवन में तबाही थी। लोग कराह रहे थे। ऐसी राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक दशा में हसरेल को लगा कि यह सब आतन्क क्यों? नाजी हुकूमत जर्मनवासियों का दमन क्यों कर रही थो? इस और ऐसे ही अनेकों प्रश्नों ने हसरेल को बाध्य किया कि वे घटनाओं के विश्लेषण के लिये फीनोमिनोलॉजी को विकसित करें। इसी अवधि में *पीटर बर्जर* (Peter Berger) ने भी अपनी कृतियों द्वारा कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न रखे। अमेरिका में छठे दशक में सामाजिक अशांति थी। वहां नागरिक अधिकारों का आन्दोलन उग्र रूप ले रहा था। इधर नारी आन्दोलन ने भी अपना सिर उठा रखा था। इन सामाजिक दशाओं में अमेरिका में शुट्ज और सन्त्याना ने *फीनोमिनोलॉजी* को एक आन्दोलन के रूप में विकसित किया।

यह आश्चर्यजनक नहीं है कि जब यूरोप व अमेरिका में सामान्य जनजीवन शोषण व दमन के शिकंजे में आ गया, तब लगा कि परम्परागत मान्यताओं, पूर्वाग्रहों आदि को भूलकर समाज विज्ञानवेताओं को कुछ बुनियादी प्रश्न रखने चाहिये। इस संदर्भ में देखें तो फीनोमिनोलॉजी सिद्धान्त न होकर, एक समाजशास्त्रीय विद्या या उपागम है जो सामाजिक सांस्कृतिक धरोहर को लोक जीवन की मान्यताओं व मुहावरों को संदेह के संदर्श में देखता है। जितना संदेह गहरा होगा, इस विद्या की धार उतनी ही पैनी होगी।

फीनोमिनोलॉजी को बौद्धिक आधार देने में तीन विचारकों के योगदान को महत्वपूर्ण समझा जाता है। इन विचारकों में हसरेल, शूट्ज और सन्त्याना है। जहां हम इन विचारकों की फीनोमिनोलॉजी समाजशास्त्र के बारे में व्याख्या करेंगे।